ऐसा क्यों?

("संवेदन सांस्कृतिक कार्यक्रम" के लिये नाटक)

(पात्रः पांच पुरूष और तीन स्त्री (**5M, 3F**))

(1)

(मंच पर कोरस घूम रहा है, हमींग चल रहा है, उस में से औरत–1 बाहर निकल कर दर्शकों से संबोधन करती हैः)

F-1 मैं एक औरत हूँ। मेरा नाम क्या है, मेरा मुल्क कौन सा है, मेरा धरम–ईमान क्या है.... यह सब बाद में आता है। हो सकता है, इन सब का कोई मतलब ही ना हों। मैं सिर्फ औरत हूँ और अकेली हूँ। कुछ भी हो जाये, मैं अकेली रह जाती हूँ।

(जब कोरस के घेरे में से मर्द–1 निकल के आता है, औरत के समांतर में खड़ा हो जाता है)

M-1 और मैं हूँ एक मर्द; औरत मेरे बिना अधूरी है।

F-1 और मर्द मेरे बिना। हम दोनों ने यह दुनिया बनाई है, बसाई है।

M-1 और मैं इस दुनिया को चलाता आया हूँ हमेंशां से।

F-1 नहीं, तुम भूल रहे हो। इस भूल जाने की और याद रखने की चलाकी का नाम रख दिया है तुमने –इतिहास। इसी के चलते हम साथ साथ होते हुए भी आ गये हैं आमने–सामने। ऐसा क्यों?

(कोरस रिपिट करता है –"ऐसा क्यों?")

F-2 शायद मुझे पता है.... क्यों कि इस सवाल की नींव में मैं हूँ –औरत।

(लय में) सृष्टि की शुरूआत के दिन थे
थोडा थोड़ा था अंधेरा, थोड़ा सा उजियाला
सब कुछ सब का सांझा था
और समाज भी था एक कबिला
सब से आगे, सब से पहले मैं थी.... औरत!

F-2 हां... याद है मुझे! मैं तेरी इज़्ज़त करता था
डरता भी था कुछ कुछ
सिरजन की तेरी ताकत को
झुकता रहता सचमुच!
पर.... जैसे जैसे गुज़रा वक्त, समझ में आया इतना सच
सिरजन के इस जादू में तो मेरा भी बनता है हक़

F-2 और बस, तब से उस हक़ को तुम लोगों ने इतने ज़ोरों से जताना शुरू किया कि तभी से होने लगा औरतों का दमन। मर्दों ने परिवार बनाया। समाज को दे दिया नियमन। और धीरे धीरे करके डालते गये हम औरतों पर ढ़ेर सारे बन्धन!

M-1 नहीं, वे बन्धन नहीं..... वह तो हैं सुरक्षा कवच। तुम्हारी अलामती की ढ़ाल।

M-2 हां, तुम कितनी कोमल हो, नाजुक हो! हमें तुमको संभाल के रख़ना चाहिये।

M-3 तुम तो हमारे वंशों की माता हो। हमें तुम्हारा ख़याल रख़ना चाहिये।

M-4 और तुम हमेशां भारी काम नहीं कर सकतीं! कुदरत ने ही तुम्हारा शरीर ऐसा बनाया है।

M-5 घर की चार–दीवारी में ही तुम सलामत हो।

M-1 तुम्हें सब की नज़रों से बचाना मेरा फ़र्ज़ है।

M-2 तुम्हें अपना बनाना मेरा धर्म है। तुम मेरी हो और तुम्हें मेरी हो के रहना है।

(एक–एक जोड़ी बनती है, फिर दूसरे की औरत के लिये ख़ींचतान होती है –हिंसकता से....)

Mपूराः तुम मेरी हो ..... नहीं! मेरी हो! नहीं मेरी....मेरी.... (लड़ते–भिड़ते गिर/मर जाते हैं)

F-1 बस, तब से शुरू हो गई लड़ाई.... औरत की सुरक्षा के नाम। असल में तो वह थी औरत के शरीर को पाने की लड़ाई। शरीर पर काबू रख़ने की लड़ाई।

F-2 और तब से मैं हो गई 'शरीर'। औरत का मतलब हो गया एक शरीर। ये ही नज़रिया चल पड़ा –तब से लेकर अब तक ऐसे ही होता आया हैं अत्याचार। मेरे लिये और मुझ पर। बस, अत्याचार।

तीनों (साथ में) ऐसा क्यों?
(गिरे/मरे मर्दों में हलचल। जैसे उठ उठ कर उस 'क्यों' के जवाब देते हैं)

M-1 क्यों कि औरत और ज़मीन हमारी इज़्ज़त हैं।

M-2 क्यों कि औरत और ज़मीन हमारी मिलकत हैं।

M-3 औरत है मर्द की इज़्ज़त –समाज की इज़्ज़त –मुलक की इज़्ज़त

M-4 हमें अपनी इज़्ज़त के लिये काबू पाना पड़ता है अपनी औरत पर।

Mकोरस ऐसा ही होता आया है हर युग में, हर समाज में, दुनिया के हरेक कोने में.... हम मर्दों को सत्ता देनेवाली हर व्यवस्था में।

.....

F-1 मैं सिर्फ़ 'शरीर' हूँ उस का एहसास सबसे पहले और सबसे ज़्यादा होता है 'शादी' नाम की व्यवस्था में।

F-2 सब से असरकारक और सबसे अधिक 'अपनी' लगनेवाली इस व्यवस्था में सबसे अधिक शोषण होता है मेरा और वह भी जो 'मेरा अपना' कहा जाता है उस मर्द के हाथों....

F-3 हां 'अपना' भी है और 'प्यारा' भी है वह मर्द.... मानें पति।

F-1 वह रोज़ ही मेरे शरीर को काबू में रख़ता है –प्यार के नाम!

F-2 रोज़ रोज़ का वह काम.... हर रोज़ कामना के कुँए में ढ़केले जाना एक घड़े की तरह... कच्चा घड़ा –रोज़ भरो.... रोज़ खाली।

(एक–एक जोड़ा रति–मुद्रा में पर एक विधता, रिपिटेरशन)

F-3 अगर बिस्तर बोल सकता है तो कह उठेगाः बन्द भी करो अब हर रोज़ का यह बलात्कार! हालाँकि बलप्रयोग नहीं कर रहे हो तुम ऐ मर्द.... तुम, पति.... फिर भी पूछी है औरत की तुमने मर्ज़ी? हर रोज़?!

F-1 तक़िया बोल सकता है तो बोल उठेगाः बन्द भी करो ये रोना! ऐ औरत, मैं पूरा भीग चला हूँ.... कभी तो 'ना' कहना सिखो!

F-3 'ना'?.... कैसे कह दूँ मैं ना? कहीं.... मैं उस की नज़रों से गिर गई तो? कहीं उसने मुझे छोड़ दिया तो?... ना...ना... कैसे कहूँ?!

F-2 हां.... इसी बहाने वह दूसरा शरीर ले आयेगा... कभी सौतन के रूप में –कभी रखैल के रूप में... एक था राजा –दो थी रानी!

(देखने वाले मर्द तब ठहका लगाके)

M-1 अरे नहीं... इतनी झंझट कायके वास्ते? जब दूध दुकानों में से ख़रीदा जा सकता हे तो घर में गाय पालने का बखेड़ा क्यों?

M-2 पूरा बाज़ार भरा पड़ा है हर तरह के माल से... दस रूपये से ले के दस हज़ार रूपये तक का! जेब को जितना परवड़े ले आओ!

M-3 खाया–पिया–मौज़ कि.... बस, चुटकी भर में ख़ेल खतम!(ठहाके)

(सुनने वाली औरतें तिलमिला उठती हैं)

F-1 हां, हां, खूब ख़रीदो! इस्तेमाल करो! और फ़ैंक दो –जैसे मिट्टी का कुल्हड़ –जैसे पेपर–कप –जैसे.... जैसे..... टोयलेट पेपर! छि!

F-2 हाँ ख़रीदे हुए माल की ज़िम्मेदारी क्या? ख़रीदे हुए माल की मनमर्जी कैसी?

F-3 और.... खरीदें हुए शरीर के साथ जो होता है उस बलात्कार भी कहाँ कह जाता है? वहां तो सब कुछ जायज़ है.... सब कुछ!

F-1 पर इतना याद रखो –तुम जो ख़रीद सकते हो, सिर्फ शरीर है –हमारा ज़मीर नहीं, हमारी आत्मा नहीं!

तीनों ऐसा ही होता आया है, हर युग में, हर मुल्क में, हर समाज में, मर्दो को सत्ता देनेवाली हर व्यवस्था में। पर ऐसा क्यों? –3

.....

(3)

(एक ओर F1–M1 की शादी हो रही है। परस्पर फूलमाला पहनाई जाती हैं। पुरोहित मंत्रोच्चार कर रहा है। राजा अपनी पुत्री का कन्यादान दे रहा है)

F-2 (अलग जा कर) उस जमाने में, राजकुमारीओं की शादी का एक और भी मतलब होता था– दुश्मन राज्यों से संधि करने का। इज़्ज़त के नाम सजाये जानेवाले उस शरीर को ब्याह दिया जाता था दुश्मन के राजकुमार के साथ। और इसी तरह सजाये हुए औरत के शरीरों को इज़्ज़त के नाम जलाया भी जाता था –सती के रूप में, पति के शव के साथ! रानी का शरीर!

(Mकोरस बाजेगाजे के साथ सती माँ की जय जय कार करता हुआ निकलता है। उसी F1 को सती बनाया जायेगा। लोग उस का चरणस्पर्श करते हुए, फूलमाला पहनाते हुए चिता की ओर ले जायेंगे। F1 जैसे चिता पर चढ़ती है –जयजयकार के साथ जला दी जाती है।)

पुरोहित सुना! सुना! सुनो! चन्दनपुर के प्रजाजनों, सुनो! हमारे नगर की भूमि पावन हो गई है। हम सारे प्रजाजन धन्न हो गये हैं। बहादूरगढ़ क साथ की चढ़ाई हमने जीत ली है पर हमारे धन्यनाम महाराजा ने वीरगति पाई है। पर सब से अधिक प्रतिष्ठा की बात तो यह हुई की हमारी रानी मा ने सती–पद पाया है। हमारे नगर की सातों पीढ़ियाँ तर गई हैं। बोलो, सती माता की जय! (फिर से भीषण जयजयकार होतो हैं।)

(अचानक जैसे वही 'सती' चिता पर ख़डी हो जाती है)

F-1 (सती) रुक जाओ! (जयजयकार रुक जाती हैं –सब चकित) वह तो पुराना ज़माना था जब इज़्ज़त के नाम मुझे चिता पर चढ़ा दिया जाता था या जौहर करवा दिया जाता था! पर अब क्यों? (चिता से उतर कर जैसे आगे आती है) तब मैं रानी थी; पर अब तो मैं गांव देवराला की, रूपकुंवर हूँ –साधारण परिवार की साधारण बहू। और यह सोलहवी नहीं –बीसवी सदी है –सन् उन्नीसौ सत्तासी है.... अब यह चिता कैसी? अब यह सती क्यों? (सवाल से सब निरुत्तर)

पुरोहित (निर्लज्जता से) अरे बहू! तुम्हारे सती हो जाने से तो हमारा देवराला गांव वर्ल्ड फेमस हो जायेगा। अब तो यहां मेले लगेंगे। समाधि बनेगी। चढ़ावे आयेंगे। तुम्हारे परिवार की आन–बान और शान बढ़ जायेगी। अगले चुनावों में इस परिवार के मर्द कहां से कहां पहूँच जायेंगे.... जब इतने सारे साधु–संतों की आशिष मिल रही हैं! अरी, कितना फ़ायदा हो जायेगा तुम्हारे सती होने पर! बोलो, सती मैया की जय!

(जयजयकार करते लोग सती को ढंक लेंगें।)

F-1 बहुत हुआ..... एक सवाल है हमाराः क्या सिर्फ इज़्ज़त के लिये ही हम औरतों को सती बनाया जाता है कि मिल्कत की भी कोई वज़ह रही है इस क्रूर परंपरा के पीछे?! (सब चुप)

तीनों जुग जुग से जुल्म हुए हम पर
सदियों से सहतीं आईं हैं
बाहर से नोंची जाती हैं
भीतर से तोड़ी जाती हैं

हर रिवाज़ ने बस, रौंदा है
हम चुप क्यों रहती आती हैं?
अब पूछना चाहते हैं हम कि ऐसा क्यों? (3)

(मर्द कोरस रुक कर, एक के बाद एक कहेगा।)

M-1 अरे, कौन कहता है कि लगातार तुम औरतों का अपमान ही होता आया है? यह मत भूलो कि इसी धरती पर रझिया सुल्ताना ने भी राज किया है, वह भी हाथों में शमशेर उठाकर!

M-2 और झांसी की रानी को कैसे भूल गई? वह तो समस्त नारी जाति के लिये गौरव की मूर्ति थी और भारत वर्ष की प्रेरणादायी रानी थी!

F-1 हां! खूब याद किया ऐसी वीरांगनाओं को! हमें पता है तुम्हारी इस उदारता का राज़!

F-2 अरे... उन दोनों को मर्द की पोषक पहननी पड़ी, मर्दों की तरह बख़्तर सजाने पड़े और मर्दों की तरह हथियार भी उठाने पड़े थे –तब जा के स्वीकार हुआ है इनका –तुम्हारी बनाई हुई व्यवस्था में!

F-3 तुमने इसी लिये तो इन की महिमा गाई "खूब लड़ी मर्दानी वो तो झाँसीवाली रानी थी"–मतलब कि औरत मर्दों की तरह सोचें, मर्दों की तरह दिखें और मर्दों जैसा व्यवहार करे तभी तुम्हारे इतिहास में लिखे जायेंगे उन के नाम?

M-3 केवल इतिहास नहीं..... शास्त्र–पुराण और महाकाव्य भी भरे पड़े हैं माताओं की महिमा से।

M-4 यहां तो माँ दुर्गा –माँ काली –माँ अम्बा –माँ भवानी.... सब को हम पूजते आये हैं –सम्मान के सिंहासनों पर बिठाते आये हैं!

F-1 हां.... यह भी खूब कही! हमें मट्टी का लौंदा ही तो समझ रखा है तुमने –जब जी चाहा तो गढ़ ली माता की मूरत और जी चाहा तो बना दिया गुड़िया –अपने ख़िलवाड़ के लिये!

(मंच पर दो हिस्सों में मर्द बंट जाते हैं, दोनों हिस्सों में एक एक औरत है। एक हिस्से में एक F को 'देवी' बना कर पूजा–आरती की जाती है और दूसरे हिस्से में उसे 'गुड़िया' बनाकर डान्स करवाया जाता है। दोनों ओर अनुरूप आरती और फ़िल्मी गाना चलेगा। जेसे ये काली काली आँखें.... भीगे होंठ तेरे.... आदि!)

Mकोरसः ऐसा ही होता आया है, हर युग में, हर मुल्क में, हरेक समाज में, हम मर्दों को सत्ता देनेवाली व्यवस्थाओं में।

.....

(4)

(घूमते हुए कोरस में से तीनों औरतें बारी बारी निकल कर कहेंगीं:)

F-1 एक ज़माने में औरत के शरीर को दीवारों में चुन दिया जाता था। अब के ज़माने में औरतों के शरीरों की नुमाईश होती है। उसे गाँवों की, शहरों की, मेगासिटीओं की ऊंची ऊंची बिल्डींगों की दीवारों पर चिपकाया जाता है, टांग दिया जाता है।

F-2 औरत के शरीर की यह नुमाईश होती है उसे 'माल' बना कर अपना 'माल' बेचने के लिये!

F-3 मॉल के ऊपर 'माल' और अंदर भी 'माल'!

(औरतों के भद्दे पोज़, फ़ेशन परेड़ में केटवॉक और मर्दो के अश्लील रिएक्शन)

F-1 औरत का सृजनशील शरीर बन गया मर्दो की इज़्ज़त!

F-2 औरत का सृजनशील शरीर बन गया मर्दों के लिये मनोरंजन!

F-3 औरत का सृजनशील शरीर बन गया माल–कमोडिटी–वस्तु–चीज़!

(चीज़ बड़ी है मस्त मस्त गाते हुए मर्द इर्दगिर्द घूमेंगे)

F-123 (साथ में) ऐसा ही होता आया है, हर युग में, हर समाज में, मर्दो को सत्ता देनेवाली व्यवस्थाओं में! पर सवाल है हमारा कि –ऐसा क्यों? (3)

.....

(5)

(वर्तुल से निकलकर तीनों औरतें मंच के अलग अलग छोर पर, अलग अलग तरह के आईनों में जैसे झाँकतीं हैं। खुद को निहारती हैं)

F-1 कौन हूँ मैं? बस, औरत! क्या पहचान है मेरी? बस, औरत!

F-2 क्या नाम है मेरा? अरे, वह तो जब ससुराल में जाती हूँ –बदल दिया जाता है –रिवाज़ के नाम पर!

F-3 क्या अटक है मेरी? अरे, वह भी तो शादी होने पर बदल जाती है –परंपरा के नाम पर!

F-1 क्या है मेरा धरम? मेरा ईमान? वही..... जो मेरे घरवाले का होता है!

F-2 पर मेरा धरम–ईमान सिर्फ समाज ही नहीं –सियासत भी तो तय करती है! वही, मर्दोंवाला राजकारण!

F-3 याद है, सन उन्नीसौ सैंतालीस मे क्या हुआ था? ज़मीन को बांट कर उसे दिये गये थे दो–दो देशों के नामः हिन्दुस्तान और पाकिस्तान!

F-1 उस वक़्त औरतों पर क्या कुछ नहीं हुआ?.... मज़हब के नाम?!

F-2 औरतों के हिन्दु शरीर, औरतों के सिख शरीर, औरतों के मुसलमान शरीरों पर क्या कुछ नहीं हुआ?! धरम के नाम?!

F-3 मत याद दिलाओ..... सभ्यता के इतिहास के उन पन्नों की बदबू से मैं.... मेरा.... दम घुटता है!

F-2 सच की यादों से डरना कैसा? याद है.... जैसे मालोसामान इधर से उधर ले जाया जाता है –ले आया जाता है वैसे ही, औरतों के शरीरों को ले जाया गया, ले आया गया!

F-1 गाड़ियों भर भर के –औरत के नोंचे–ख़सोटे–कटे–फ़टे ज़िस्म! कुछ ज़िन्दा –कुछ अधमरे –कुछ मरे हुए शरीर –गाडियां भर भर के.....

(कोरस ट्रेन बनाएगा, औरते जा बैठेंगी, ट्रेन चलेगी, बीच रास्ते औरते टप् टप् गिरेगी, कुछ जिन्दा, कुछ अधमरी, लाश।)

(ट्रेन फिर से चलेगी, इधर से उधर, दृश्य रिपीट होगा।)

(गिरी हुई औरतें इकट्ठा हो कर गायेंगी)

F-1,2,3 मज़हब के नाम हमें हरदम
तड़पाया, सताया, जला दिया
रिश्ते छूटे और दिल टूटे
अपनों ने हम को छोड़ दिया
हम औरत भी तो इन्साँ हैं
हर समाज ने यह भूला दिया
तहजीबों से यह सवाल हैः ऐसा क्यों? (3)

.....

(6)

F-1 और.... उन ख़ौफ़नाक यादों के सच की परछांइयाँ बस, लंबी ही लंबी होती गई। सन् सैंतालीस के बाद गुजरात में –उनहत्तर में, चौरसी–पंचासी और छियासी में क़ौमी दंगों में औरत के शरीरों के वही हाल हुए, बार बार! हिन्दु शरीर..... दलित शरीर..... मुसलमान शरीर..... औरतों के।

F-2 इस देश में तो सिख़ औरतों को भी कहां छोड़ा गया –सन चौरासी में?

F-3 बाबरी मस्जिद टूटने के बाद, बानवे–तिरानवे में भी वही हुआ –हर बार।

F-1 इज़्ज़त! नफ़रत! –मर्दों की तासीर हैं जैसे! मर्दों के इतिहास ने उन्हें नफ़रत करना सिखाया। उनकी इज़्ज़त तभी बढ़ती है जब वे किसीसे नफ़रत कर पाते हो! बढ़चढ़ के नफ़रत कर पाते हों।

F-2 सन् सैंतालीस के बाद आपस में उनकी नफ़रत बढ़ती गई और औरत के शरीर झेलते गये जुल्म और हिंसा!

F-3 औरतों में भी मुसलमान औरतें जैसे नफ़रत का सबसे नज़दीकी निशाना!

F-1 तब हुआ गुजरात–2002..... औरतें –नरोड़ा पाटिया की, गुलबर्ग सोसायटी की, पंचमहाल की, साबरकांठा की, दाहोद की..... मुसलमान औरतों की हालत कैसी हुई?

(Mकोरस, जैसे दूर से हाथों में हथियार लेकर आ रहे हैं। क़ौमी नारे ललकारते हुए औरतों पर टूट पड़ते हैं –औरतें पस्त। मर्द वैसे ही हिंदुत्ववादी नारे लगाते हुए चले जाते हैं)

F-1 (धीरे धीरे उठ कर) हां.... उन दिनों टोले आये थे। और टोलों के चेहरे नहीं होते हैं, होती है लाल लाल आँखें और माथे पर वैसे ही लाल लाल टीके।

F-2 नहीं! होते हैं –टोलों के भी चेहरे होते हैं। कईयों को मैंने खूब पहचान लिया था, मेरे हाथों की तरकारी ख़ानेवाले चेहरे, मेरे शौहर के साथ दुकानदारी करनेवाले चेहरे, मेरे हाथों से राख़ी बंधवानेवाले चेहरे, पडौसीयों के, गांव के मुख़िया के, बडे–बुझुर्गों के चेहरे भी थे उन में जिन्होंने हमारे साथ.....(टूट जाती है)

F-3 उन जाने अनजाने चेहरों के साथ देखे थे हमने सैंकड़ों हाथ.... उन हाथों ने हमें.... तहसनहस कर दिया.... पामाल कर दिया.....(टूट जाती है)
(हमींग करते हुए Mकोरस के पास जा कर, एक एक के हाथ पकड़ कर बारी बारी कहेंगी:)

F-1 अरे, तुम्हारे हाथ भी तो इन्सानों के हाथ है.... आम आदमी के हाथ..... फ़िर भी हैवान कैसे हो गये?

F-2 वैसे तो तुम्हारे ये हाथ कितनी खूबसूरत चीज़े बनाते हैं..... फिर भी हैवान कैसे हो गये?

F-3 तुम्हारे हाथ तो मेहनतकशों के हाथ हैं; धान उगाते हैं, कपड़े बुनते हैं, घर बनाते हैं.... फिर भी हैवान कैसे हो गये?

F-1 तुम्हारे हाथों ने रचे हैं स्कूल–हस्पताल–पुस्तकालय–प्रयोगशाला; फिर भी हैवान कैसे हो गये?

F-2 तुम्हारे हाथों ने इस धरती को, दुनिया को, समाज को इतना सजाया है.... फिर भी हैवान कैसे हो गये?

तीनों: (साथ में) ऐ हम पर जुल्म करनेवालों! तम ते इन्सान हो या हैवान? (3)
(नतमस्तक मर्द शरमिंदा हो के अपना बचाव करेंगें)

M-1 हां.... हमारे हाथों को हैवान बनाया जाता है हर बार.....

M-2 क्यों कि कुछ चालाक लोग ताड़ गये हैं कि हमें सत्ता बहुत पसंद है। और वे हमारी इस लालच का खूब फ़ायदा उठाते आये हैं।

M-3 हर बर हमारे हाथों को पहले नफ़रत के ज़हर में डूबोया जाता है और फ़िर दुश्मनों के खून में!

F-1 (तपाक् से) तो क्या हम औरतों को तुम दुश्मन समझते हो?

M-1 नहीं, तुम दुश्मनों की औरत हो, दुश्मनों की इज़्ज़त हो –इसलिये!

M-2 दुश्मनों के बच्चे पैदा करनेवालियां हो। मतलब कि, हमारे कई सारे नये दुश्मन पैदा करनेवालियाँ!

M-3 और यह बात सदियों से हमारे कानों में कूट कूट कर भर दी गई है।

M-4 कानों में ही नहीं; मन में, दिलों में भी उन लोगों ने ये ही ज़हर डाल दिया है।

M-5 अगर हमने दुश्मनों को जड़ों से ख़तम नहीं किया तो हम मर्द नहीं हैं!

M-1 जब हमारी मर्दानगी को ललकारा जाये तो और क्या होगा?!

M-2 इस बार तो हमारी कुहनियों पर गुड़ लगाया गया.....

M-3 हमारी हथेलियों में चाँद दिख़ाया गया.....

M-4 हमारे मेहनतकश हाथों में त्रिशूल–तलवार–बन्दूक और बम थमा दिये गये.....

M-5 और फिर कानून और पुलिस ने प्रशासन से मिलकर हमें खुली छूट दे दी हत्याकांड की.... फिर क्या?!

(हिन्दत्ववादी नारे और भी ज़ोरों से सुनाई देते हैं)
(M कोरस फ़िज़ –F कोरस में हलचल)

F-1 इस बार के हत्याकांड ने तो हम मुसलमान औरतों को वापस, सोलहवीं सदी में ढ़केल दिया। हम पर पाबन्दियाँ और भी मज़बूत हो गईं।

F-2 बुर्क़े और भी काले होते गये। अंदर का अंधेरा और भी गहरा होता गया।

F-3 हमारे दिलों पर सबर के पत्थर रख दिये गये। हमारी जुबान पर चुप्पी की डोर और भी कस दी गई..... मज़हब के नाम पर।

F-1 बुर्क़ा–पर्दा ही नहीं; हमारे लोगों के तो एरिये ही अलग हो गये। घर की–बाहर की.... सारी दीवारें और भी ऊंची हो गई। वह भी तहज़ीब के नाम पर!

F-2 और तो और..... पर हम औरतों पर तो अपनेवाले मर्दों ने भी क्या कुछ नहीं किया?! उन दिनों राहत–केम्पों में हमारेवालें भी हमें सिर्फ़ ज़िस्म समझ कर अपनी हवस पूरी करते थे, है ना?!

F-3 अपने और पराये मर्दों ने किये हुए बलात्कारों के एहसास कैसे अलग हो सकते हैं?!
(मर्द कोरस में से जैसे 'आज़ा' एँ आ रही हैं)

M-1 ऐ हमारी क़ौम की माँओं–बहनों और बेटियाँ! इतना समझ लो कि इस मुल्क में अब तुम्हारी कोई सलामती नहीं रही!

M-2 बुर्क़ा–पर्दा–हिजाब में हीं तुम्हारी सलामती है।

M-3 हमारे कुराने शरीफ़ में इसी लिये फ़रमाया गया है कि अपनी मिल्कत को, अपनी इबादत को और अपनी औरत को हमेशा छिपा के रखो!

F-1 वाह! खूब कही..... इक्कसवीं सदी में भी यह दुनिया हम औरतों के लिये सलामत जगह नहीं बन पाई है! ऐसा क्यों?

तीनों F हर बार ऐसा ही होता आया है। हर युग में, हर समाज में, दुनिया के हरेक कोने में, मर्दों को सत्ता देनेवाली व्यवस्थाओं में ऐसा ही होता आया है! पर हमारा सवाल यह है कि, ऐसा क्यों? (3)

.....

(हमींग करते हुए M कोरस को रोक कर:)

F-1 सुनो! यह नफ़रत की विरासत सिर्फ कौम और मज़हब के नाम पर ही कहाँ होती है!?

F-2 हाँ, हमारे समाज में तो कुछ ज़ात–पांत से नफ़रत करने में भी तो बड़प्पन समझा जाता है, इज़्ज़त समझी जाती है!

F-3 वैसे तो यह ज़ात–पांत वाला जुल्म मर्दों के साथ भी किया जाता है पर जब उसी ज़ात की औरतों के साथ जो होता है वह दुगुनी क्रूरता से होता है..... एक तो ज़ातवाली नफ़रत और दूसरी, औरतवाली नफ़रत!

(कोरस में से M1 अचानक आता है और उस बोलनेवाली F3 का जुड़ा पकड़ के, खिंचता हुआ डके घेरे में ले जाकर, M2 के क़दमों में फ़ैंकता है)

M-1 हरामज़ादी कहती है कि झाड़ू नहीं लगायेगी, वाड़े साफ नहीं करेगी –इसकी हिंमत तो देखो, सरपंच!

F-3 (और भी हिंमत से) हां–हां.... नहीं करूंगी मैं ये काम! वैसे तो चाहती हूँ कि हमारेवाले कोई भी न करें ये काम! पर कहां.....? अरी, पगार तो घरवाला ले जाता है पर टोकरा सिर पर मैं उठाती हूँ।

M-1 तू क्या..... तेरे बाप को भी उठाना पड़ेगा टोकरा!

F-3 ये ही तो कहती हूँ –न बाप ने उठाया, न ससुर ने..... माँ ही ढोती रही, सारे गांव की गंदकी! अब यहां सास ने थमा दिया टोकरा! पर मैं नहीं ढ़ोने वाली! उस सहर से आये हुए भले आदमी ने कहा था कि कभी तो ना कहके देखो, बहन! ..... तो ले.....ना, ना, ना!

M-2 क्या बोली? सा... चोहड़ी! मेरे मुंह लगती है? मेरे –सरपंच के?

F-3 हां हां.... कहूँगी.... सारे गाँव से कहूँगी कि..... तुम हमें जो भी समझो हम तुम्हारी घौंस में अब आनेवाले नहीं हैं!

छूने से तो कतराते हो
पर जी चाहा तो बुलाते हो
हम फ़ल तो नहीं कि चूस लिया
बस, यूं चक्ख़ा और फ़ैंक दिया
तुम जुल्म के ठेकेदारों के हाथों में हमरी इज़्ज़त क्यों?

M-2 चूप हो जा रांड़! बहुत बोलती है! बेसरमी इतनी चढ़ गई है सिर पे तो घुमाओ सारे गांव में. ... नंगी करके।

(यह कहते हुए उसका दुपट्टा खींच लेता है और M कोरस की ओर ढ़केलता है.... वे उसे ढ़केलते हुए गोल गोल घुमाते हैं। अपने बदन को हाथ से ढांपती हुई F3 चिल्लाएगी –"ऐसा क्यों?") वह मंच के एक छोर पर ओझल हो जाती है)

.....

(8)

(इस चीख के तुरंत बाद दूसरी औरत F1 को खींच के ले जाया जाता है और लताडते हुए एक कोने से दूसरे कोने तक ढ़केलते हुए आगे लाते हैं)

M-1 भाग..... भाग यहां से..... डायन कहीं की!

M-2 तेने जादूटोने से तो गाँव बरबाद हो चला..... नदियों में पानी सूख गया..... बच्चे मरने लगे.... ढोर–डंगर मरने लगे..... भाग..... डायन..... चुड़ैल!

M-3 बड़ी आयी है ज़मीन का हक़ जतानेवाली..... (पथ्थर उठा उठा के मारते हैं)

F-1 हां, पता है मुझे.... मैं ने हक़ जो मांगा; सब की जान सुख गई! डायन कहो या चुड़ैल... मैं चुप नहीं रहनेवाली।

डायन भी तुमने हमें कहा
पथ्थर से मारा, जला दिया
जब जब भी हक़ की माँग हुई
तब तब तुमने ये हाल किया

यह दुनिया मर्दों की ही नहीं.... औरत का नहीं है हिस्सा क्यों?

F-1 हम आदिवासी औरते.....

F-2 हम दलित औरतें.....

F-3 हम इस देश और दुनिया की सारी पिछड़ी रखी गई जातियां–रंग और नस्ल की औरतें....

F-1 हम गरीब और शोषित औरतें सवाल करती हैं कि

तीनोंः ऐसा क्यों? ऐसा क्यों? ऐसा क्यों?

कोरसः (घूमता हुआ) ऐसा ही होता आया है हर युग में, हर समाज में, दुनिया के हरेक कोने में, मर्दों को सत्ता देनेवाली हर व्यवस्था में।

.....

(हमिंग करते हुए कोरस में से F3 निकलेगी –दर्शकों से)

F-3 कभी धरम, कभी क़ौम, कभी ज़ात, कभी रिवाज़..... औरत के शरीर पर अत्याचार करने के कई कारण होते हैं.... पर हम कश्मिरीओं पर तो जो कुछ भी हो रहा है.... वह देश के नाम पर हो रहा है!

F-2 सन् सैंतालीस में हिन्दुस्तान आज़ाद हुआ और पाकि़स्तान बना तब हम कश्मीरीओं ने भी एक 'आज़ाद कश्मीर' का ख्वाब देखा था।

F-3 पर अपनी अपनी हदें बढ़ाने की भूख उन मर्दोंवाली सियासत की ख़ासियतें है।

F-1 हमारे दोनों ओर की मर्दाना सियासत हम पर जैसे अपने स्याह पंजे फ़ैलाती गई..... कश्मीर की वार्दियाँ में झरनों की गूंज को दबोच लिया बारूद के धमाकों ने!

F-2 कश्मीर की वादियों को.... कश्मीर की औरतों को कुचलने लगी फ़ौजी जूतों की एड़ियां और हिमालय की चोटियां घायल होती रहीं.... होती रहीं..... होती रहीं।

F-3 हमारा सवाल यह है कि हम ना तो पाकि़स्तानी है, ना बलोचीस्तानी और ना तो हिन्दुस्तानी! फिर भी हमारे इधरवाले कश्मीर में हिन्दुस्तान का लश्कर क्यों और उधरवाले कश्मीर में पाकि़स्तान का लश्कर क्यों?

(यह कह रही है कि Mकोरस हाथो में बन्दूकों के साथ आ धमकते हैं)

M-1 हम हिन्दुस्तानी फ़ौजी हैं। हम सरहदों की सुरक्षा करने आये हैं।

F-1 सरहद? तुम मर्दों के दिलोदिमाग पर हरदम छानेवाली एक ख़याली लकीर!.... कहां की सरहद..... किस की सरहद?

M-2 चुप करो! LOC का मतलब जानती हो?

F-2 तुम चुप करो! तुम होते कौन हो यह कन्ट्रोल करनेवाले मेरे मुल्क की ज़मीन को?!

M-3 चुप कर बुढ़िया..... बता.... कहां है तुम्हारा बेटा? (घुसने जाता है)

F-2 घर में नहीं है! मत घुसो हमारे घरों में!

M-4 अरे, घरों में क्या, हम तो तेरे में भी.....(बंदूक से गंदी हरकत करता है)

F-2 अरी कमीनों! बाज़ आओ! तुम्हारे घरों में माँ–बहनें है या नहीं?

M-5 अरे, हम तो तेरे घर में देखने के लिये आये हैं.... तेरा आतंकवादी बेटा कहां छिपा के रख़ा है?

F-3 बस..... ये ही माहौल पैदा कर दिया है तुमने..... जैसे हरेक कश्मीरी आतंकवादी है! सही में आतंकवादी तो तुम हो! तुम!

M-1 चुप कर बुढ़िया! सीधे सीधे बता दे..... बेटे को कहां छिपाके रखा है?

M-2 बेटा नहीं तो बेटे का बाप भी चलेगा!(ठहाका)

F-2 चुप करो बेशरमों! मेरे बेटे को और उस के बाप को.... इसके.... इसके.... इसके.... बेटे को भी.... सारे कश्मीर के बेटे को पकड़ के रखा है तुमने उन छावनियों में.... कितने साल बित गये.....(रो देती है)

F-3 सुरक्षा के नाम पर तुम फ़ौजीयों ने और क्या किया है, हमारे कश्मीर मे?

F-2 किया है..... और भी बहुत कुछ किया है इन हत्यारों ने हम–औरतों के साथ! इन के लिये हम कश्मीरी औरतें तो खिलौनें है ना?!

F-1 तुम समझते क्या हो हम को और हमारे कश्मीर को?

(M हतप्रभ हो जाते हैं... कुछ पल के बाद)....

M-1 यह सवाल हम से मत पूछो..... हम कुछ नहीं जानते!

M-2 हमें तो बस, ऐसे ही भेज दिया जाता है..... हाथों में मौत का सामान देकर!

M-3 वहशत के पंजों ने हमें जकड़ लिया है!

M-4 हमारे दिलोंदिमाग में आतंकवाद, आतंकवादी, गद्दार..... यह सब कूट कूट के भर दिया गया है!

M-5 और यह सोच आती है ऊपर से!

M-1 समझ लो..... समझ लो कि हम या तो दिल्ली दरबार के हाथों की.....

M-2 या इस्लामाबाद के हाथों की....

M-3 अहं! सही में तो अमरिका के व्हाईट हाउस के हाथों की कठपुतलियां हैं.... हम तुम्हारे सवालों का क्या जवाब दे सकते हैं!?

F-2 हां! खूब हाथ धो दिये.... अपनी करतूतों से! कुछ होश है तुम्हें कि तुमने भी कश्मीर के हर बेटे को आतंकवादी बना कर, जुनूनी मज़हबीयों की कठपुतली बना दिया है?!

F-3 और कश्मीर की वादियों को मैदाने–जंग?!

(जवान नतमस्तक–तीनों औरतें जैसे तोहमत लगा रही हैं)

तीनोंः क्यों सालों हमरें मुल्क में यूँ
बन्दूक को बोने आये तुम?
हरियाली फ़सलों के ऊपर
क्यों मौत छिड़कने आये तुम?
अरे कौन हो तुम? क्या होते हो? हमसे क्या लेने आये तुम?
तुम भूखे–सियासी भेड़ों को
हमरे ही देह की नेमत क्यों?..... ऐसा क्यों? (3)

तीनोंः (कोरस)
ऐसा ही होता आया है, हर युग में, हर मुल्क में, दुनिया के हरेक कोने में, मर्दों को सत्ता देनेवाली व्यवस्थाओं में!

.....

(F कोरस वर्तुल में, कुछ लय में डोलते हुए गा रहे हैं)

F-तीनोंः हम कामरु देश की सात सहेलियां
कुछ लोगों के मन की पहेलियां
अलग संस्कृति अलग ही बोली
अपने गीत कहेंगें कहानियां
हम बन परबत की हैं बेटियां

F-1 हम पूर्वोत्तर की पहाड़ी प्रजाः नागालेन्ड, मणिपुर, मिझोरम, असम

F-2 मेघालय, त्रिपुरा, अरूणाचल की औरतें.....

F-3 हमारे यहां औरत का राज चलता था कभी, सन्मान बहुत हो रहा है हमारा अभी भी .....

(फिर से वही लय में झूमती है –पर M हाथ में बंदूकें लेकर)

M-1 हेन्ड्स अप! बन्द करो ये नाच–गान.... वरना.....

F-1 तुम कौन होते हो हमारे गीत रोकनेवाले?

M-2 तुम्हारे गीतों में अलगाव है.... यह मत भूलो की तुम भी भारतीय हो!

F-2 तुम कौन हो हमारी संस्कृति पर आक्रमण करनेवाले?

M-3 चुप! तुम्हें पता है, हम भारत के फ़ौजी है और तुम्हारे मुल्क की सुरक्षा हमार अधिकार है।

F-3 मतलब कि तुम्हारे पास सुरक्षा के बहाने, हम लोगों की क़त्ल करने का लायसन्स है.... लायसन्स टु किल! हत्या का परवाना।

M-4 शट्अप! तुम नहीं जानती, ऐसा कहने पर तुम्हारे क्या हाल हो सकते हैं!

F-3 क्या कर लोगे?.... अरे, हमें अपना समझते हो तो हमें शांति से जीने दो और पराया समझते हो तो खुले मैदान की लड़ाई लड़ो!

F-1 हमें तुम्हारी बन्दूकोंवाली सुरक्षा नहीं चाहिये।

F-2 निकल जाओ, हमारे मुल्क से! हम अमनपसंद लोग है।

M-5 बकवास बन्द! दुश्मन देशों के लिये रास्ता खोलनेवालों पर इन्डिया की फ़ौज कैसे भरोसा करेगी?

F-3 ये सब क्या है? हमारा तो सूत्र ही है, जियो और जीने दो!

M-1 अरी, जिन्दा रहने और रखने के लिये तो तुम्हारे पास आये है....

(अब मर्द अपने घिनौने रूप से व्यवहार करेंगे) (धीरे धीरे गंदी नज़रों से देखते हुए औरतों के नज़दीक जा रहे हैं)

F-2 रुक जाओ.... आगे मत बढ़ो.... (पीछे हटती जाती है)

F-3 बंद करो यह तमाशा; हमारे मुल्क मे तुम्हारी कोई ज़रूरत नहीं है।

M-2 (गंदे तरीके से) अरी.... हम को है ना तुम्हारी ज़रूरत! इसी लिये तो आये हैं.... (औरते बौखलातीं हैं, सोल्जर्स आगे बढ़ते हैं)

M-3 हमें तो तुम्हारी बहुत ज़रूरत है –तुम्हें भले ही ना हो!

(और F3 को अपने घेरे में खींच लेते हैं –बीच में गिरा कर.... भीषण मुद्राएँ.... F3 की चीख़ जाता है –1,2 दौड़कर F-3 के नज़दीक जाती हैं –ख़ौफ़ से)

F-1 मनोरमा? (आघात से, पीड़ा से)

F-2 मनोरमा? (गुस्से से चीख कर)

(अचानक दोनों, जवानों के सामने आ जाती हैं)

F-1 आओ, आओ.... लो, लेलो! तुम्हें ये ही चाहिये ना.... औरत के शरीर?

F-2 ले लो.... सिर्फ मनोरमा को ही क्यों? हमारे साथ भी वही करो.... लो....

(भौंचक्के जवान्स के सामने दुपट्टे हटाकर खड़ी हो जाती हैं)

F-1 हां, हां.... आओ.... ये रहे नंगे शरीर..... हमारी मुल्क की औरतों के....

F-2 लो पूरी करो तुम्हारी ज़रूरतों को.... ये ही लायसन्स चाहिये ना, तुम्हें?

F-1 सुरक्षा के नाम पर तुम ये ही करते आये हो, देश के नाम तुम ये ही करते आये हो, सरहदों के नाम तुम यह ही करते आये हो! लो.... ले लो....

F-2 हमारे मुल्क में घुसने के लिये बहाने क्यों बनाते हो? तुम दुनियाभर के फ़ौज़ियों ने दुनियाभर की औरतों के साथ ये ही किया है!

F-1 उधर कश्मीर में भी और श्रीलंका में भी, बांग्लादेश में भी और अफ़घानीस्तान में भी... हर कमज़ोर देश की औरतें तुम्हारे लिये हवसखोरी का निशाना है.... लो, ले लो.... इसी में तुम्हारी मर्दानगी है तो....! (जवानों के इर्दगिर्द घूमती है –ताने देती हुई)

(आश्चर्य मूढ M कोरस सिर झुका कर वर्तुल में घूमता हुआ)

M-1 हां, हम मर्द हैं और हम शर्मिन्दा हैं।

M-2 हम भी युद्धखोर संस्कृति के शिकार हैं।

M-3 वैसे तो युद्ध की शुरूआत हमीं ने की थी

M-4 युद्धों ने बना दिया हमें हैवान

M-5 युद्धों ने छिन ली हमारी इन्सानियत

M-1 युद्धों ने मार दी हमारी संवेदनाएँ

M-2 युद्धों ने उजाड़ दिये हमारे दिलोदिमाग को

M-3 युद्धों ने दीं हैं हमें सिर्फ़ भूख और प्यास

M-4 भूख.... दौलत की, औरत के देह की, देश की...

M-5 (काट कर) झूठ मत बोलो! देश? किस का देश? हमारा कौनसा देश?

M-1 जिस के लिये हम औरों को मारने और खुद भी मरने को तैयार है वैसी ज़मीन के टुकड़े को कहेंगे 'हमारा देश?'

M-2 हमारी बनाई हुई कंटीली तारों के पीछे बिछी ज़मीन का नाम है 'हमारा देश?'

M-3 जिस देश को हमारी मौत से शांति मिलती है वह है 'हमारा देश?'

M-4 हां, हम मारे जायेंगे उस की ख़ातिर; हमने ही पैदा किये हुए दुश्मनों के हाथों!

M-5 और बना दिया जायेगा हमें 'शहीद'

M-1 फ़िर तीन सौ पैंसठ दिनों में होगा हमारे लिये एक दिनः शहिद दिन!

M-2 कुछ फूल.... कुछ जलती हुई मोमबत्तियां..... दो मिनट का मौन.... बस?!

M-3 फिर मिलेगी तोपों की सलामी और मरणोत्तर परमवीर–चक्र.... बस?!

M-4 पर तब तक, पल पल मरनेवाले हमारे प्राण तो कब के ठंडे हो चुके होंगे!

M-5 वैसे भी, हाथों में हथियार पकड़वा कर, इन्सानों को मारने के लिये ढ़केलते वक्त किया जाता है हिमें बेहोश... नशा पिला के!

M-4 नशा.... देशभक्ति का!

M-5 फिर से झूठ?! वह नशा तो होता है मर जाने के मुआवजे की तगड़ी रकम का।

M-3 और होता है नशा शराब काः मरनेवालों का खून देखकर पगला ना जायें इस लिये पिलाई गई रम का नशा! (इतना कहते हुए पागलों की तरह ठहाके लगा कर हंसता है, जिसे देख–सुनकर दूसरे जवान हक्केबक्के रह जाते हैं पर फिर वे भी उस हास्य में जुड जाते हैं। F 1,2 गुस्से से यह सब देख सुन रही हैं पर मंच के बीच में पड़ी F3 जैसे ठहाकों से जी उठती है)

F-3 (तपाक् से) शर्म नहीं आती, अपनी कायरता पे हंसते हुए? ना! तुम्हें भला काहे की शर्म? इन्सानों को मारते मारते तुम्हारे ज़मीर तो कब के ख़त्म हो चुके है! हम जैसी औरतों को नोंचते नोंचते तुम्हारे दिल तो कब के पथ्थर के हो चुके हैं। वरना.....

(M कोरस स्तब्ध)

M (साथ मेंः) वरना क्या?

F-3 वरना... अपने किये पर पछतावा तो कर सकते हो!

F-1 हम जैसी औरतों पर जुल्म नहीं करोगे ऐसी प्रतिज्ञा तो कर सकते हो!

F-2 इन्हीं बंदूकों का रूख मोड़कर, निशाना बदल कर दुनियाभर में शोषण को खत्म तो कर सकते हो।

F-3 अब भी वक़्त है, सोच लो!

F-1 इन्हीं हाथों से लिख सकते हो तुम.... नया इतिहास!

F-2 कुछ भी छिपा कर नहीं; उजागर कर के अपनी गलतियों को!

F-3 अग़र तुम लिखोगे ज़िन्दगी के अक्षर नये सिरे से.... तो हम औरत भी करेंगी उस पर उपने हस्ताक्षर।

F-1 हा, सिरजन का इतिहास लिखना है तो मर्द और औरत साथ में ही रचेंगे ज़िन्दगी की किताब...

F-2 समानता की क़िताब.....

F-3 बेहतर समाज की होंगी जिस में कविता....

F-1 आनेवाली पीढ़ियों के लिये होंगी जिस में कहानियां....

F-2 आओ, वक़्त नहीं बीता है; अब भी उम्मीद है....

F-3 उम्मीद है अभी दुनिया बदलने की.....

F-1 दुनिया बदलने के लिये सांझा संघर्ष करने की.... उम्मीद है अब भी!

(तीनों औरतें गीत शुरू करेंगी, मर्द जुड़ते जायेंगे)

जीना है हमें, कहना है हमेंः इन जुल्मों को अब ख़त्म करें
बर्बरता के दिन बीत गये, नफ़रत की कहानी ख़त्म करें
एक साँझी दुनिया सिरजेंगें, चलों! आज ही से हम शुरू करें
इक्कीस सदी के सूरज को निगलेंगी जुल्म की जुल्मत क्यों?
हम जवाब की अब खोज करें, सब साथ में पूछेः ऐसा क्यों?

.....